



अतीत राग

पहला इंजेक्शन देने के बाद डॉक्टर ने कहा था, 'आँखें खोलो, ऊपर देखो, नीचे देखो, बाएँ देखो, दाएँ देखो।' ऐसे ही दूसरा इंजेक्शन देने के बाद और तीसरा इंजेक्शन देने के बाद भी कहा और आँख की स्थिति जाँची, लेकिन आँख निष्क्रिय नहीं हो रही थी। आँखों पर मसाज करते समय एनेस्थेसिस्ट ने कहा था, 'डॉक्टर, हिज़ आइज़ आर वेरी डीप सीटेड एंड आई बॉल इज वेरी सॉफ्ट, पेशेंट इज वेरी यंग।'।

'कारगिल मोर्चे पर जाना है?' डॉ. मलकाण ने पूछा। ऑपरेशन टेबल पर लेटे समीर ने कहा, 'आप जाने दें तो अभी चला जाऊँ।'।

डॉ. मलकाण ने कहा, 'बहुत जागरूक शिक्षक हो!' बाद में नर्स की ओर झुककर कहा, 'एन.सी.सी. के कमान्डर हैं।' फिर घूमकर समीर की ओर देखकर डॉक्टर ने कहा, 'रिलेक्स समीर रिलेक्स, आँखों को शांत करो, दिमाग शांत रखो। यू. आर. वेरी टफ, एनेस्थेशिया के चार इंजेक्शन आँखों के आसपास दिये। एक नौद का इंजेक्शन दिया और आप अभी बात भी कर रहे हैं, फिर भी आँखें मूवमेंट भी कर सकती हैं।'।

समीर ने मन में कहा, 'टफ कैसा? जागरूक कैसा? सीमा पर लड़ रहा सैनिक भी आराम के वक़्त अथवा डॉक्टर के पास रिलेक्स कहते हुए शांत हो जाता है।' एनेस्थेसिस्ट ने आँख के ऊपर और नीचे चार इंजेक्शन दिये थे। पहला इंजेक्शन देने के बाद डॉक्टर ने कहा था, 'आँखें खोलो, ऊपर देखो, नीचे देखो, बाएँ देखो, दाएँ देखो।' ऐसे ही दूसरा इंजेक्शन देने के बाद और तीसरा इंजेक्शन देने के बाद भी कहा और आँख की स्थिति जाँची, लेकिन आँख निष्क्रिय नहीं हो रही थी। आँखों पर मसाज करते समय एनेस्थेसिस्ट ने कहा था, 'डॉक्टर, हिज़ आइज़ आर वेरी डीप सीटेड एंड आई बॉल इज वेरी सॉफ्ट, पेशेंट इज वेरी यंग।' समीर अब तक पैंतीस की उम्र तक भी नहीं पहुँचा था। आँख के आस-पास एनेस्थेशिया के इंजेक्शन दिये जा रहे थे, तब आँख का गोला मानो कोई अलग चीज़ हो ऐसा एहसास होता था। शरीर से कुछ अलग हो रहा हो तो बर्दाश्त होगा ही नहीं... पीड़ा होती थी। इंजेक्शन देने के बाद आँखें गोटी जैसे हो गई थीं। बचपन में गोठियाँ खेल में हारने या जीतने के बजाय फूट जाती हुई देखी थीं। वो याद आया। अब तो गोटी... फल बन गई थी और उसमें से रस चूसते हों, वैसे इंजेक्शन के स्पर्श से लगता था। सतत दृश्य देखने और सम्भालने की छटपटाहट थी। दुविधा थी। सारे ही दृश्य सम्भालने थे। पुरानी फिल्मों के रिकॉर्ड की तरह एक-एक घटना याद करके उसका संगीत, उस चित्र के रंगों को पाना और स्पर्श की अनुभूति करते रहना। जाँच करते हुए सोचना कि अमुक घटना में एक नहीं, दूसरी तरह से प्रतिसाद दिया होता तो, अलग तरह का बर्ताव किया होता तो! कहीं पर उग्र होने के बजाय संयम रखा होता तो, कहीं पर चुप रहने के बदले बोल पाया होता तो, कहीं पर पत्र लिख सका होता तो, कहीं पर जल्दबाज़ी न की होती तो और कहीं पर निशाना नहीं चूकने की सावधानी रखी होती तो... लेकिन अधिकतर हालात का गुलाम रहना पड़ा। नसीब ने आँखों पर पट्टी बांधी हो, कभी निशाना नहीं चूकने के बारे में कोई भी खयाल आये तो क्या कर पायेंगे?

अंत में डॉक्टर नितिन मलकाण के हाथ से ब्लेड के प्रथम स्पर्श के साथ ही आँख के स्नायुओं ने अपने आप सहयोग दिया, क्योंकि तमाम दृश्यों का अंत आ गया था। मात्र प्रकाश था एक नया आकाश, नई दुनिया। मन में समेटे हुए सारे दृश्य उस आकाश में फैल जाना चाहते थे। बार-बार एकांत में या अंधकार में खलबली करते विचारों के चित्र फिर उठे थे अधिक मुखर होकर। सोलह-सत्रह साल की उम्र में प्रथम बार बीयर पी थी। वो स्वाद, सुगंध, होटल का माहौल। पंद्रह साल बड़े मित्र कमल के साथ में होटल के कोने में। सोलह रुपये की गोल्डन ईगल ब्रांड की बोतल। कॉलेज की दूसरी मंजिल पर केमिस्ट्री लेबोरेटरी के बाहर खास प्रकार की गंध की उपस्थिति में रीना के साथ कुछ मिनटों के संवाद। नदी किनारे के टीले पर की पाठशाला छूटने के बाद नजदीक के घर में रहते आचार्य के घर में से उनकी किशोरवय की पुत्री के गायन का स्वर। ट्रेन में बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े जाने की पहली घटना और आखिरी घटना। पहली बार लापरवाही और युवा आयु देखकर टीसी ने कम दंड किया और दूसरी घटना में खाली जेब देखकर दया खाकर टीसी ने छोड़ दिया था। युनिवर्सिटी में पोलीटिकल साइंस के हैड ऑफ डिपार्टमेंट हिमांशुभाई ने तीन बार पूछा था- 'समीर तुम्हारा पोस्ट ग्रेजुएशन हो गया?' शायद वे उसे लेक्चरर की जगह के लिए ऑफर देना चाहते थे। उस प्रश्न का अर्थ उस वक़्त समझा न था? शायद समझा था। लेकिन नज़र के सामने अधिक तनख्वाह की दूसरी नौकरी पाने की लालसा और नया घर खरीदने के लिए लोन पाने का संघर्ष था। इसीलिए ही शादी के लिए आने वाली दरखास्तों की अधिक जाँच-पड़ताल का अवकाश न था। जिस क्षण जो सूझा, वैसा किया। ईश्वर जो करे, वो सही। गहन अंधकार से प्रभु परम तेज से तू ले जा। हरिश्चंद्र चौधरी नाम का वरिष्ठ अधिकारी, अपेक्षा स्वामी नाम की सर्बोर्डिनेट और हंसु मुंडिया जैसे चलते पुर्जों ने सिखाये हुए पाठ, मनीष, रमेश, महेंद्र, सुयश वगैरह मित्रों द्वारा पैरों तले से गलीचा खींच लेने का प्रयास, डिप्रेशन के क्षणों में एड. दिहेयकर, उद्योगपति डॉ. पटेल या संशोधक वसा साहब का साया, वीरेंद्र बक्षी जैसे राजनेता ने घर दिलवाने में निरपेक्ष भाव से की हुई मदद और... अपने से अधिक पाँच, दस या पंद्रह साल बड़ी स्त्रियों के साथ अच्छा परिचय, मैत्री कह सकते हैं शायद। वे स्त्रियाँ जो आदर और विश्वास रखतीं और मिलतीं, तब जो आनंद प्रदर्शित करतीं वो देखकर हल्के-फुल्के क्षणों में विचार आता कि अगर वो उनकी उम्र का होता, तो शायद उन स्त्री मित्रों ने ही शादी का प्रस्ताव रखा होता। फिर डॉक्टर मलकाण की आवाज सुनाई दी, 'नर्स, लैन्स देना' और समीर का वह नये आकाश, नये प्रकाश का युग समाप्त हो रहा था। दृश्यों का कोलाज पूरा हो रहा था...

अतीत राग का चित्र पूर्ण हुआ था। डॉ. मलकाण मानो पर्दा गिरा रहे थे।

डॉक्टर ने लैन्स आँख में रखा और फिर आँख के अंदर सब कुछ जैसा पहले था, वैसे रखा। डॉक्टर का स्मितपूर्ण चेहरा दिखा और फिर वर्तमान में आया। आँख को साफ करके पट्टी लगाने के लिए फिर स्पिरिट...

फिर वही गंध कॉलेज की दूसरी मंजिल की केमिस्ट्री की लेबोरेटरी के बाहर... लेकिन संवाद न था। लेबोरेटरी के रसायनों की गंध समेट रखी थी। लेकिन धीमे-धीमे फैलकर उड़ जाती थी। शायद डॉक्टर ने आँखों से उस खुशबू को उड़ा दिया था। इत्र की शीशी का ढक्कन खोल दिया था। 'हमने देखी है उन आँखों की महकती खुशबू, हाथ से छू के इसे रिशतों का इल्जाम न दो।' शायर गुलज़ार को एक टीवी मुलाकात में पूछा गया था। आपकी कविता में दुर्बोधता होती है। खुशबू को देखने की और स्पर्श करने की बात करते हैं, उसे कविता कहते हैं? उसके जवाब में गुलज़ार ने कहा था- 'हाँ, कविता कहते हैं। शब्द और अनुभूति के भीतर जाओ तो पता चले। 'सिर्फ एहसास है ये रूह से महसूस करो, प्यार को प्यार ही रहने दो कोई नाम न दो।'।

समीर को लगा कि बीस-पच्चीस मिनटों में वह किसी सागर के तले से होकर आया है। उस लेबोरेटरी की गंध और संवाद का अनुभव 16 से 18 साल की उम्र में हुआ था। समय बर्बाद हुआ था। आधी उम्र के तले को बार-बार छूकर आया था।

डॉक्टर ने कहा, 'चलो खड़े हो जाओ, नर्स व्हील चेयर ले आओ, चार पाँच इंजेक्शन दिये हैं, लेकिन समीर खुद ही ऑपरेशन टेबल पर से उतरा। एक नर्स ने हाथ में पुड़िया देकर कहा, 'यह लीजिये आपका 'मोतिया बिन्दु'...! समीर ने एक आँख से देखा और अपने अंदर से ही कुतर कर निकाला हुआ कुछ एक मुट्ठी में बंद करके रख लिया। फिर चल दिया, सहारा लिये बिना। हाथ पकड़ने आई नर्स पीछे चल रही थी। समीर मौन रहकर एक आँख से देखते हुए मानो कहता था, मुझे किसका सहारा? कोई मूर्तिमन्त सहारा नहीं है। एक चित्र था, जिसे आँख में से उतार लिया।'।

बाहर दूसरी एक नर्स ने दवा और आँखों में डालने वाली बूंदों के अलावा फॉलोअप चैकिंग की सूचना देने के बाद फिर कहा, 'इस मोती का ताबीज बनाकर पहनना। ताबीज बनाकर पहनो इसे आयत की तरह।'। 'कुरान की आयत अथवा उपनिषद् का एकाध मंत्र नहीं, बल्कि गीता का पूरा अध्याय उसकी मुट्ठी में था। समीर ने कहा, 'हाँ, इतने सालों तक आँखों में सम्भाला रे, अब ताबीज में ही रखेंगे!'

धर्मेश भट्ट

वरिष्ठ कथाकार एवं पत्रकार, दिव्य भास्कर, मुंबई